© 2017 IJNRD | Volume 2, Issue 6 June 2017 | ISSN: 2456-4184

रियासत कालीन झुंझुनू क्षेत्र के कतिपय साहित्यकार

–डॉ. अवतार कृष्ण शर्मा, प्रवक्ता, इतिहास
स्वामी विवेकानन्द राजकीय महाविद्यालय, खेतड़ी

वीर स्थली के रूप में विख्यात शेखावाटी का झुंझुनूं क्षेत्र साहित्यकारों की कर्मभूमि भी रहा है। मुख्य रूप से खेतड़ी ठिकाने के अन्तर्गत अनेक साहित्यकार हुए जिन्होंने साहित्य के क्षेत्र में अलग पहचान बनाई। इस कारण यहां मुख्य रूप से खेतड़ी ठिकाने मे पडने वाले क्षेत्र के साहित्यकारों को प्रतिनिधि साहित्यकार के रूप में लिया गया है। राजकीय प्रश्रय के साथ–साथ स्वतन्त्र रूप से भी यहां अनेक साहित्यिक कृतियों की रचना हुई। खेतड़ी के कई राजा इस विषय में विशाल हृदय के मालिक रहे। राजा अजीत सिंह के समय तो दूर–दूर से विदृत जन खेतड़ी खींचे चले आते थे। साहित्य के क्षेत्र में उनका काल बड़ा महत्वपूर्ण रहा।

खेतड़ी ठिकाने के प्रतिनिधि साहित्यकारों में प्रथम उल्लेखनीय नाम पंण्डित नवनिधि राम का है। इनका जन्म झुन्झुनूं में संवत् 1789 (1718 ई.) में माघ शुक्ला दूज के दिन हुआ था। इनके पितामह पंण्डित सुखलाल शार्दुल सिंह शेखावत के यहां प्रधान पंण्डित और कथा वाचक थे। पंण्डित सुखलाल के ज्येष्ठ पुत्र हरनारायण जी के पांच पुत्रों में नवनिधि राम सबसे छोटे थे। 16 वर्ष की आयु तक पढ़ने लिखने में उनकी विशेष रूचि नहीं थी। विवाहोपरान्त गृह कलह से क्षुब्ध 'नंदुराम' ने चुपचाप घर छोड़ पढ़ने के लिये काशी प्रयाण किया। काशी में 14 वर्ष तक एकाग्रता से विद्या अध्ययन कर ये काशी के परिगणीय विद्वान बन गये। अन्ततः 14 वर्ष उपरान्त नन्दूराम से नवनिधि राम बन कर वे सन् 1769 ई. में झुन्झुनूं लौटे। झुन्झुनूं लौटने के एक वर्ष बाद ही नवरात्रा के अवसर पर खेतड़ी ठिकाने के संस्थापक भूपाल सिंह उन्हें खेतड़ी ले आये। भूपाल सिंह उनको बड़ा मान देते थे। उनकी मृत्यु के बाद भी खेतड़ी में उनका सम्मान बराबर बना रहा। राजा अभय सिंह ने धर्मशास्त्र और अठारह पुराण उनसे सुने तथा उनकी विदृता से प्रसन्न होकर पुरस्कार में धन के साथ–साथ सन् 1808 ई. में राज मिश्राई का पट्टा भी उन्हें प्रदान किया। इतना गौरव प्राप्त करने पर भी उनके परिश्रम और विद्यानुराग में कोई कमी नहीं आयी। बड़े परिश्रम से उन्होंने वृहद् ग्रन्थ गरूड़ पुराण का सारोद्वार किया। उनके द्वारा संग्रहीत गरूड़ पुराण बड़ा प्रसिद्ध हुआ। सारोद्वार गरूड़ पुराण की संस्कृत टीका भी उन्होंने लिखी। इसके अतिरिक्त इन्होंने शिव महिमा की टीका, शाकम्भरी स्तवराज, गंगाष्टक सटीक, शाकम्भरी नीरांजन स्त्रोत, दष महाविद्या स्त्रोत, भगवती नीरांजन स्त्रोत, नारसिंह स्तवराज, शिवापराध क्षमायन, कामेश्वर स्तवराज, गुरू गीता, आत्म संयमों पाठ पद्धति, पूजन प्रकार, शोड़ान्यास विधि, कौला विध पोत, अन्नाय पद्धति, नीतिसार, वेदान्त तत्व दीप, स्मार्त निर्णय, धर्मशास्त्र प्रदीप, काली स्तवराज, मुकुंद लहरी, मुंकुद नीराजंन स्त्रोत जैसी छोटी–बड़ी 22 पुस्तकों की रचना भी की।

पण्डित नवनिधि राम मन्त्र शास्त्र में भी पारंगत थे। उन्होनें स्वयं एवं ब्राह्मणों द्वारा सैकड़ों सकाम प्रयोग किरवाये। प्रसिद्ध भाषा वेदान्त ग्रन्थ 'वृत्ति प्रभाकर' के रचियता साधु निश्चलदास जी महाराजा पंण्डित जी के मित्रों में थे। 92 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हुई।

गुण ग्राहक, विद्वानों के आश्रयदाता, प्रजावत्सल राजा एवं योग्य शासक होने के साथ–साथ राजा अजीत सिंह प्रतिभा सम्पन्न कवि भी थे। अजीत सिंह द्वारा रचित कोई ग्रन्थ तो उपलब्ध नहीं है परन्तु उनके द्वारा रचित फुटकर कविताओं से उनकी काव्य क्षमता एवं प्रतिभा पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। कई तरह की विधाओं के साथ –साथ उनके कवित् में महान् ग्रन्थों के गूढ़ ज्ञान का साक्षात्कार होता है। महान ग्रन्थों के क्लिष्ट पदों को सरल शब्दावली देना उनके लिए बड़ा सरल कार्य था। गीता सार का पद्य, जिसमें अपने बंधु –बांधवों को युद्ध स्थल में देख कर उठे अर्जुन के मन के द्वंद्व एवं कृष्ण द्वारा दिये गये उपदेश के बाद अर्जुन का भेद भ्रम दूर होने का उल्लेख है, का वर्णन करते हुये राजा अजीत सिंह ने लिखा है –

''वासुदेव के ईशपने में तनिक न मन संदेह रह्यो,
धन्य–धन्य अर्जुन बड़ भागी जाने नैनन दरस लह्यो।
जापे करूणां करि करूणानिधि, गीता को उपदेश कह्यो,
मौह समंद में डूबत लखि कै अरजुन को कर मांहि गह्यो।
अजीत तांहि उपदेश सुनत ही भेद भरम को सिखर ढ्ह्यो,
वासुदेव के ईशपने में तनिक न मन संदेह रह्यो।''

अजीत सिंह साधारण बात को गूढ़ार्थ में कवित् रूप देने में सिद्धहस्त थे। ऐसे कूट पद जानकार ही समझ सकता था। कविराज बलदेव जी बाहरठ कुछ समय के लिए अलवर चले गये थे तब राजा अजीत सिंह ने यह सोरठा लिख कर भेजा था[1] –

''मदन पिता बड़ भात, तृतीय प्रथम मिल द्वितीय जुध
इन्द्र ध्वनी के तात, ता अरि दृय तुम बंच्चयों।''

उक्त सोरठे की प्रथम पंक्ति में कवि का नाम बलदेव आ गया क्योंकि मदन (प्रद्युम्न) के पिता श्री कृष्ण के बड़े भाई बलदेव थे। दूसरी पंक्ति में उनकी जाति चारण आ गयी क्योंकि अक्षरमाला के तृतीय वर्ग (च,छ,ज,झ,यं,) का प्रथम अक्षर 'च' होता है और उससे मिली दूसरी मात्रा जुड़ने पर 'चा' बनता है। इसको आगे 'जुध' के पर्याय 'रण' के स्थान पर रखने पर चारण बन जाता है। इस तरह प्रथम दो पंक्तियों में उनका नाम 'बलदेव चारण' आ गया । तीसरी पंक्ति के इन्द्र को वर्षा का कारण मेघ मानने तथा ध्वनि का पर्याय 'नाद' करके जोड़ने पर मेघनाद बनता है। उसका तात् रावण हुआ। अन्तिम पंक्ति के 'ता अरि ' अर्थात रावण के शत्रु हुए राम, राम दृय का अर्थ दो बार अर्थात राम–राम तुम बंच्चयों। अर्थात– बलदेव चारण तुम्हें राम–राम।

टोंक के नवाब इब्राहीम अली खां की ठुमरी – ''तरफत जियरा समझत नाहिं, बरजत हूं पर मानत नाहिं'' राजा अजीत सिंह के सामने किसी ने बड़े ही सरस ढंग से गाई। तब अजीत सिंह ने विद्वत मण्डली

को इससे मिलता जुलता भाव देकर नवाब की ठुमरी के वजन की ठुमरी बनाने के लिये कहा। जितनी भी ठुमरियां बनाई गई उनमें सर्वश्रेष्ठ राजा अजीत सिंह की स्वयं की रही।[2] –

''विन बिन मोहि कछु न सुहावे,
तरफत चित अति ही अकुलावे।
ऐ री सखी हमरे प्रीतम को, जाय कोई यह बात सुनावे,
यह जोबन छीजत है छन छन, बीत गये पर फिर नहीं आवे।
बहुत कोल बीते आवन के, गिनत गिनत जियरा घबरावे,
हाय, दई अखियां तरसत हैं, विरह विपत नित मोही जरावे।
मरन न देत आस मिलबे की, जीवन छिन विन बिन नंहि भावे,
सुध बुध सबही भूल गई री, यह दुख तो अब सह्ये न जावे।
मतलब को गरजी जग सारो, अर्जी मोरी कौन सुनावें,
तन मन जीत रीति सब करिके भजि हो राम काम बनि आवे,
हे जगदीश ईश विश्वम्भर, तुम बिन यह दुख कौन मिटावे,
करि कृपा करूणानिधि मों पे, मिले पिया जिया हर्ष न पावे।
ज्ञानी यहि ज्ञानि करि समझे, रसिक याहि रस पच्छ लगावे,
जोग भोग गति दोय एक करि सुमत अजित पद सहज बनावें।''

इस कविता में अजीत सिंह ने विरही की विरह वेदना – 'बिन (उन) बिन मौहि कछु न सुहावें' और मोह पाष से मुक्त होने की आषा रखने वाले योगी की अभिलाषा –'मरन न देत आस मिलबे की, जीवन छिन विन बिन नहिं भावें' दोनों को समान रूप में व्यक्त कर दिया।

कवित् रूप में समस्या रखकर तथा कवित् द्वारा ही उसका समाधान करने का प्रचलन उस समय बहुत अधिक था। बाहर से आयी विद्वत मण्डली आदि के आगमन पर इस प्रकार के कार्यक्रम होना अजीतसिंह के समय आम बात थी। ऐसे ही अवसर पर बाहर से आये एक कवि ने एक समस्या पूर्ति के लिए रखी–''एक न फाको दिन एक है नफा को, दिन एक है वफा को एक सफम सफा को।'' इसकी पूर्ति राज अजीतसिंह ने निम्न प्रकार से की –

''कहत नसीत आन राजो को अजीत एक, सुकृत करागे जस लोगे सो ही ताको है।
कौन को है पुत्र, त्रिया, बन्धु, धन, कौन के हैं राज–साज कौन को इलाको है।
कौन के है सुभट गजराज हये कौन के हैं, दिष्ट देर देखो जब बीज को झपाको है।
एक न फाको दिन एक है नफा को दिन एक है वफा को एक सफम सफा को हैं।''

इस कवित् में अजीत सिंह ने राजाओं को सलाह देते हुए कहा कि धन–धान्य, राज–काज ये किसी के साथ नही रहते। अन्ततः एक दिन ऐसा आता है जब कुछ भी साथ नहीं रहता, सब छूट जाता है। उस समय रखी दूसरी समस्या – 'जे ते मतवारे ते ते सारे मतवारे हैं' की पूर्ति अजीत सिंह ने निम्न शब्दों में की –

''नेकी रीति जाने औ पिछाने परपंच सब, जाग्रत अरू स्वप्न औ सुषप्ति भेद डारे हैं।
गीता में विचार देह इन्द्री मन बुद्धि पाते, हावे पर रूप सो स्वरूप तत्व न्यारे हैं।
ऐसे मति पार होते मग्न ब्रह्म आनन्द में, जुक्ति नैक नीकी करि क्लेश दोष जारे हैं।
वे ही है महात्मा मतवारे ओ असंग यह, जेते मतवारे ते ते सारे मतवारे हैं।''

अजीत सिंह नीति वाक्यों, नीति उपदेश, गीता आदि के स्मरणीय पदों को सरल शब्दों में भाव देने में सिद्धहस्त थे। विख्यात विद्वान योगी भ्रतहरि के श्लोक[3] का भावानुवाद बड़ा ही सरस किया है –

'' रहे भूमि पर सोय तहां कछु खेद न माने,
कोमल सेज बिछाय सुखहि मन रति न जाने।
कन्द मूल फल खाय रहे चित परसन वा को,
अलभ मिले परसाद बढ़त नहिं आनंद जा को।
गुदड़ी और दुसाल सम अपने चित एको धरै,
हरश सोक नहि देह हित योगी लच्छन यह करे।''

आसोज में दशहरा के तीसरे दिन त्रयोदशी पर राज परिवार में चार–पांच दिन तक चलने वाला सालगिरह उत्सव मनाया जाता था । अजीतसिंह के समय अंतिम बार उत्सव का समय आया तब राजा अजीतसिंह कश्मीर यात्रा से लोटते हुए रावलपिंडी में थे। उस समय उनके मुख से निकला–''लुत्फ जिंदगी खोया इस्फानन जुदा होकर, यार ने दिया धोखा उम्रे बेवफा होकर'' इससे पता चलता है कि जयपुर दरबार की विद्वेषपूर्ण नीति से उनके कवि हृदय पर गहरा विषाद बैठ गया था। अल्पायु में हुई उनकी मौत ने खेतड़ी के विद्वत समाज पर जैसे वज्रपात कर दिया।

राजा अजीत सिंह के दरबारी कवियों में बलदेव बारहट प्रधान थे। इनका जन्म 1844 ई. में अलवर के सीहाली में हुआ था। वे कवि के साथ–साथ सरस कथा वाचक भी थे। राजा अजीत सिंह के समय एक बार वे रात भर कहानी सुनाते रहे। अस्वस्थता के निदान हेतु चिकित्सकों ने राजा अजीत सिंह को एक रात जागकर बिताने की सलाह दी। यह घटना सम्वत् 1940 (1883 ई.) की है। रात्रि जागरण हो सके, इस हेतु बारहठ बलदेव को बुलाकर कहानी सुनाने के लिए कहा गया । बलदेव जी ने एक सवैया[4] कह कर उस पर ऐसी दिलचस्प कहानी सुनाई कि सुबह आठ बजे तक कहानी का सिलसिला चलता रहा और नींद पास भी फटकने न पाई। बारहठ जी की इस योग्यता पर प्रसन्न होकर राजा अजीत सिंह ने सोने का कड़ा और ताजीम के लाख पसाव में शिवनाथपुरा गांव उन्हें देकर उन्हे सम्मानित किया।[5] राजा अजीत सिंह ने बारहठ बलदेव जी को दरबार के 'कविराज' की उपाधि भी प्रदान की थी। सम्वत् 1953 (1896 ई) में खेतड़ी में उनकी मृत्यु हुई।

राजा अजीत सिंह की प्रशस्ति रचना के अलावा बलदेव जी ने अनेक फुटकर रचनायें भी लिखी। उनकी रचनाओं में ऐतिहासिक घटनाओं पर भी प्रर्याप्त प्रकाश पड़ता है। बलदेव जी ने अपने कवित् में राजा बख्तावर सिंह की रानी चुण्डावत जी के सती होने का वर्णन किया है। राजा अजीत सिंह की पीढ़ी का डिंगल में वर्णन उन्होंने निम्न प्रकार किया है –

''सुदत फत्तो शिवनाथ बखत अभलाल बाघ वट,
भूप किसन सादूल चला जगराम उजागर
झिलत मछर झूझार भोज माणिक टोडरमल,
राज भोज राजान राज राजान रायसल,
सुजाण राय मलह सिखर कारण धारणा त्रिंतरा,
सुदतार पैठ पीढ़्यां सरब उज्ज्वल भूप अजीतरा।''

राजा फतेह सिंह बहादुर के आश्रित कवि के रूप में रणजीत ने काफी नाम कमाया। गौड़ ब्राह्मण कवि रणजीत स्वच्छंदता प्रिय आजाद प्रकृति के स्वामी थे। फतेह सिंह ने उनकी कवित्व प्रतिभा को सम्मानित करते हुये उन्हें 'कवीश्वर' की उपाधि प्रदान की थी। उनकी कविताओं में जितना अक्खड़पन होता तो उतनी ही सलीलता भी। राजा अजीत सिंह के दरबार में भी उन्हें बराबर सम्मान मिलता रहा। उनकी रचि किसी पुस्तक का तो पता नहीं चला है पर अनेक फुटकर रचनायें अवश्य प्रकाश में आई हैं। उनके दृारा रचित कवित् की बानगी इस प्रकार है –

ये री माई सांवरे ने मोरी लाज गंवाई।
चुनर झपट पटक मोरी मटकी घेर लई पग मांई,
सटक गई मोहि संग की सहेली चटक विरह की लगाई, खटक उर में न समाई।
कहो या ब्रज में कौन रीत है मैं बस के पिछताई,
आग लगै या नगर सगरे में नायं किसी की सुनाई, कहो या में कौन भलाई।
कवि रणजीत कहां अब कीजे कौन उपाई,
धन–धन भाग जगत में जिनको जो पासै हरजाई, फेर या के निकट न आई।

राजा अजीतसिंह की विद्वत मण्डली का महताब (1839–1903 ई.) एक अन्य महत्वपूर्ण सदस्य था। महताब गवैया जाति का मशहूर कलावंत था। काव्य रचना के साथ–साथ वीणा और सितार वादन में भी उसे महारत हासिल थी। महताब का भाई हुसैन खां अजीतसिंह के दरबार में वीणा वादन के लिए बड़ा प्रसिद्ध था। महताब के हिन्दी के गेय पद अत्यन्त सुन्दर और सरस होते थे।[6]

हेतमसर गांव में जन्मे राजा अजीत सिंह के व्यक्तिगत खवास पन्नालाल (1873–1928 ई.) अजीत सिंह के खवास शिवजीराम के दत्तक पुत्र थे। खेतड़ी हाई स्कूल से इट्रेन्स तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद अजीत सिंह ने उनके पिता की मृत्यु के बाद उनके स्थान पर पन्नालाल को रख लिया। अजीत सिंह की खवासगी के

कारण उन्हें निरन्तर योग्य व्यक्तियों के सम्पर्क में रहने का मौका मिला। इससे शिक्षित पन्नालाल की योग्यता में वृद्धि हुई । तुलसीकृत रामचरित्र मानस से उन्हें विशेष प्रेम था। वे कविता भी ईश्वर भक्ति सम्बंधी ही करते थे। उन्होनें 'वीर विनय' नाम से एक पुस्तक भी लिखी। उनके कवित् बहुत सरल और स्थानियता का पुट लिये होते थे। राजा अजीत सिंह की मृत्यु पर उनके द्वारा प्रकट शोकोच्छवास निम्न प्रकार से था –

''जो जो थी हमारी अभिलाशा नरेश संग, बाको सब रंग ढंग मरते ही खो गयो,
पन्ना बिन अजीत है समीत सब खासगी के, प्रीत को बिछोनों करि सारो सुख सो गयो,
नये–नये तरज और मर्ज सब रयासत के, दर्ज कर कागज में मोती सा पिरो गयो,
सोहनी सी शान वारो मोहनी सी जबान वारो गाहक थो गुणी कहां लोप हाय हो गयो।''

चिड़ावा निवासी गोविन्द राम दर्जी शेखावटी ख्याल गायिकी को प्रतिष्ठित करने वालों में से थे। बचपन से ही गोविन्द राम की रूचि गाने–बजाने में अधिक थी। इन्होनें अनेक रचनायें रची लेकिन इनकी कविताएं अश्लीलता के आधिक्य होने के कारण शिष्ट समाज में अधिक आदृत नहीं हो पाई। जाट का ख्याल, स्वामी चेली का एवं याचक बोहरा इनकी प्रसिद्ध कृतियां हैं। अश्लीलता की अधिकता के बावजूद उसकी कृति जाट का ख्याल में विवाहादि कृत्यों, मेलों, त्यौंहारों, जाट जाति में न्योते की प्रथा आदि का प्रमाणिक वर्णन अत्यन्त रोचक तरीके से किया गया है। वस्तुतः इस कृति में जाट की प्रकृति का बहुत हद तक यर्थाथ वर्णन है। गोविन्द राम ने और भी बहुत सी फुटकर रचनाएं की, जिनमें '24 मासियां', जो शेखावटी में बहुत अधिक गाया जाता रहा है, को छोड़ कर बाकी सब अश्लीलता प्रधान हैं। उन्होंने समय की मांग के अनुसार ही कविताएं रची। 90 वर्ष की लम्बी उम्र पाने के बाद 1905 ई. में चिड़ावा में इनकी मृत्यु हुई। शेखावटी की ख्याल गायिकी को नई ऊंचाईयां देने वाले नानूलाल राणा और उजरा तेली इनके शिष्य थे।

चिड़ावा के निवासी पण्डित तुलसीराम उद्भट विद्वान थे। इनका जन्म गौरीर में सन् 1817 ई. में हुआ था। इन्होंने पण्डित सीताराम सिरोही वाले से शिक्षा प्राप्त कर चिड़ावा को कर्म स्थली बनाया।इनकी दो कृतिया 'गंगाद्वेष्टक' और 'गीता का दोहों में भाषानुवाद' प्राप्य थी। सम्भवतः इन्होंने और भी पुस्तकें लिखी जो अब उपलब्ध नहीं हैं । उद्भट विद्वान होने के साथ वे शिक्षा त्यागी पुरूष और प्रसारक भी थे। इन्होंने अनेक गरीब विद्यार्थियों को स्वंय के खर्चे से विद्या अध्ययन सुलभ करवाया ।

चिड़ावा के ख्याल को सर्वाधिक प्रसिद्धि नानुलाल राणा ने दिलाई। नानूलाल राणा का जन्म चिड़ावा में 1844 ई. में हुआ था। इन्होंने हरदत्तराय, धनश्यामदास चौरसिया, श्योबक्स पाण्डा और गोविन्द राम दर्जी से शिक्षा पाई। इनके गुरू श्योबक्स से इनको बचपन के नाम बख्तावर के स्थान पर नया नाम नानूलाल मिला। अपने सम्पूर्ण काल में इन्होंने लगभग 40–45 ग्रन्थ लिखे। इनके द्वारा बनाये गये ख्याल– शिशुपाल–रूकमणी, निजामुद्धीन बादशाह, ढोला–मरवण, लैला–मजनू, हीर–रांझा, सौदागर वजीर जादी, बादशाह शहजादी, विराट पर्व भाग चार, इन्द्रसभा, नल दमयंती, चकवे नैन, जगदेव कंकाली, दुल्हा धाड़ी, पृथ्वीराज चौहान, रिसालु कामदेव, सेठ मुनीम, पठान शहजादी, मुसलमान बादशाह, चीर हरण इत्यादि अद्यावदि तक बड़े प्रचलित रहे

हैं। इनके कवित् बड़े मधुर, सरस और गेय होते थे। 1904 ई. में उनकी मृत्यु हुई।

नानूलाल की मण्डली में उजीरा तेली भी ऐक सहयोगी थे पर मतभेदों के चलते उन्होनें पृथक् रूप से ख्याल गायिकी शुरू की। ये भी गोविन्द राम दर्जी के शिष्य थे। इनके ख्याल श्रोताओं की भावनाओं को झकझोर डालते थे। कहा जाता है कि इनकी बनाई लावणी 'छोरे कंध' के मंचन पर एक बालक युवती ने कामोद्धीपन से व्याकुल होकर आत्मघात कर लिया था। तब से उक्त लावणी का फिर कभी मंचन नहीं किया गया। उजीरा तेली ने मालदे, हाड़ी रानी, सुलतान को भात, नरसी जी का भात, वज्र मूरख, अमरसिंह, शीलो सतवंती, माघव नल, काम कंदला, शशि पन्ना, श्याम किलंजा, इन्द्र परि, भर्तहरि, जाल आलम अंजुमन आरा, पूरणमल, हकीम आदि ख्यालों की भी रचना की।

जमनादास ब्यावलावाला, जमनादास पुजारी, पंण्डित रघुनंदन प्रसाद शास्त्री, हजारी मल निर्मल, पंण्डित हरलाल, पंण्डित राम प्रसाद शर्मा, हरलाल जी गुरू, बंशीधर पचलंगिया, मन्नालाल गुरू आदि भी सम्मानित विद्धान एवं कवि थे। जमनादास जी ब्यावला गाने के कारण 'ब्यावलावाला' के नाम से विख्यात हुए। इन्होंने जानकी मंगल, शनिचर जी की कथा, लव–कुश नामक ग्रन्थों की रचना की। चिड़ावा निवासी जमनादास जी पुजारी कवि होने के साथ–साथ सुगायक भी थे। इनकी कविताएं औज से परिपूर्ण एवं मधुर होती थी। इनमें शब्दालंकार एवं अनुप्रास की प्रबलता बहुत पाई जाती थी । 'भरत मिलाप' नामक ख्यात पुस्तक के लेखक बंशीधर पचलंगिया कविता के अच्छे जानकार कवि थे। इनकी अनेक स्फूट कविताएं वीर भारत समाचार पत्र में छप चुकी हैं। धार्मिक पुस्तकों के लेखन में हजारी मल जी निर्मल का नाम उल्लेखनीय है। चिड़ावा में श्योनंद राय के घर जन्में हजारीमल जी ने अनेक पुस्तकें लिखी जिनमें से सत्यनारायण जी की कथा और शनिचर की कथा उल्लेखनीय है। बंशीधर पचलंगिया के जन्म जात प्रतिभा सम्पन्न शिष्य मन्नालाल गुरू ने अधिक पढ़े लिखे नहीं होने पर भी पाण्डित्य पूर्ण कविताएं रची। इन्होंने अपने ललित उपनाम से लगभग तीन सौ दोहों की 'ललित सतसई' नामक पुस्तक लिखी। रघुनन्दन प्रसाद शास्त्री प्रसिद्ध विद्वान थे। पिलानी में बिड़ला द्वारा आयोजित शेखावटी के पण्ड़ितों के सम्मेलन में दी गई समस्या को निर्धारित सीमा 3 मिनट में छह सात श्लोक रचकर इन्होंने पुरस्कार जीता था। पर मात्र 24 वर्ष की तरूणावस्था में ही वे स्वर्गवासी हो गये। खेतड़ी हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक के पद से सेवानिवृत हुए पंण्डित हरलाल जी ने 'संगीत माधव' और 'कुसुम लतिका' नामक पुस्तकें लिखी। संस्कृत पद रचना में इन्हें विशेष महारत हासिल थी। राजा अजीत सिंह के गुरू पंण्डित गोपीनाथ जी भी बड़े विद्धान थे। अजीतसिंह के अनुरोध पर इन्होंने श्रीमद्भागवत गीता का गायन रूप में भाषानुवाद किया था जो 'गीतामृत घटी' के नाम से छपी। इस पुस्तक में कई पद्य राजा अजीत सिंह के भी रचे हुए हैं। इसके अतिरिक्त इन्होंने 'राम सौभाग्य शतक' एवं अजीत सिंह के वंश पर 'वंश वर्णन प्रशस्ति' की रचना भी की थी।

संदर्भ

1. अजीत सिंह के सहायक मुंशी जगमोहन लाल द्वारा पं. झाबरमल्ल शर्मा को लिखा पत्र दिनांक 21 दिसम्बर 1920.
2. अजीत सिंह के सहायक मुंशी जगमोहन लाल द्वारा पं. झाबरमल्ल शर्मा को लिखा पत्र दिनांक 21 दिसम्बर 1920.
3. 'क्वचिद भूमौ शणी क्वचिदपि च पर्यङ्ग शयन। स्वचित्कथाधारी क्वचिदपि च दिव्याम्बर धरः। क्वचिच्छाकाहारी क्वचिदपि च शाल्योदान रूचिः। महात्मा योगज्ञो न गणपति दुःख न च सुखम्।।''.
4. ''नृप मार चली अपने पिव पै पिव सांप डस्सो दुख यो परि है, वन माहि गई बिनजार लई जिन बेच दई तनिक घरि है, सुत सेज रमी जद काठ चढ़ी जल दर दयो नदिया तरी है, महाराज कुमार भई गुजरों अब छाछ को सोच कहॉ करि है।''
5. झाबर मल्ल शर्मा, आदर्श नरेष, पृष्ठ 76.
6. ''ये री मांई सांवरे मोहि रंग दी सारी, केसर रंग अबीर कुंकमा अरू किस्तूरी गारी, चन्दन चूर कपूर अरगजा भर–भर दी पिचकारी, निचोवत चोवत हारि। ..... ओ मुख मेरी जोरा जोरी झर गई मोरी किनारी, हार सिंगार नयो रस जोबन लिपट गयो बनवारी, कहूं नाहीं लाज की मारी। मद मतवारी प्रीतम प्यारी तेरे पिव बलिहारी,'' सखी महताब मिटे दुख तेरे मिल सी पिव गिरधारी, हरेगी वेदना सारी।''

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation